चालाक लोमड़ी

चालाक लोमड़ी

हिन्दी रूपान्तर : कविता/रूबी
आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : रु. 20.00

चालाक लोमड़ी

प्रथम संस्करण : जनवरी 2008
पुनर्मुद्रण : जनवरी 2010

प्रकाशक
अबुराव ट्रस्ट
डी-68, निरालानगर
लखनऊ-226020

लेज़र टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन
मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ

चालाक लोमड़ी

लोककथा

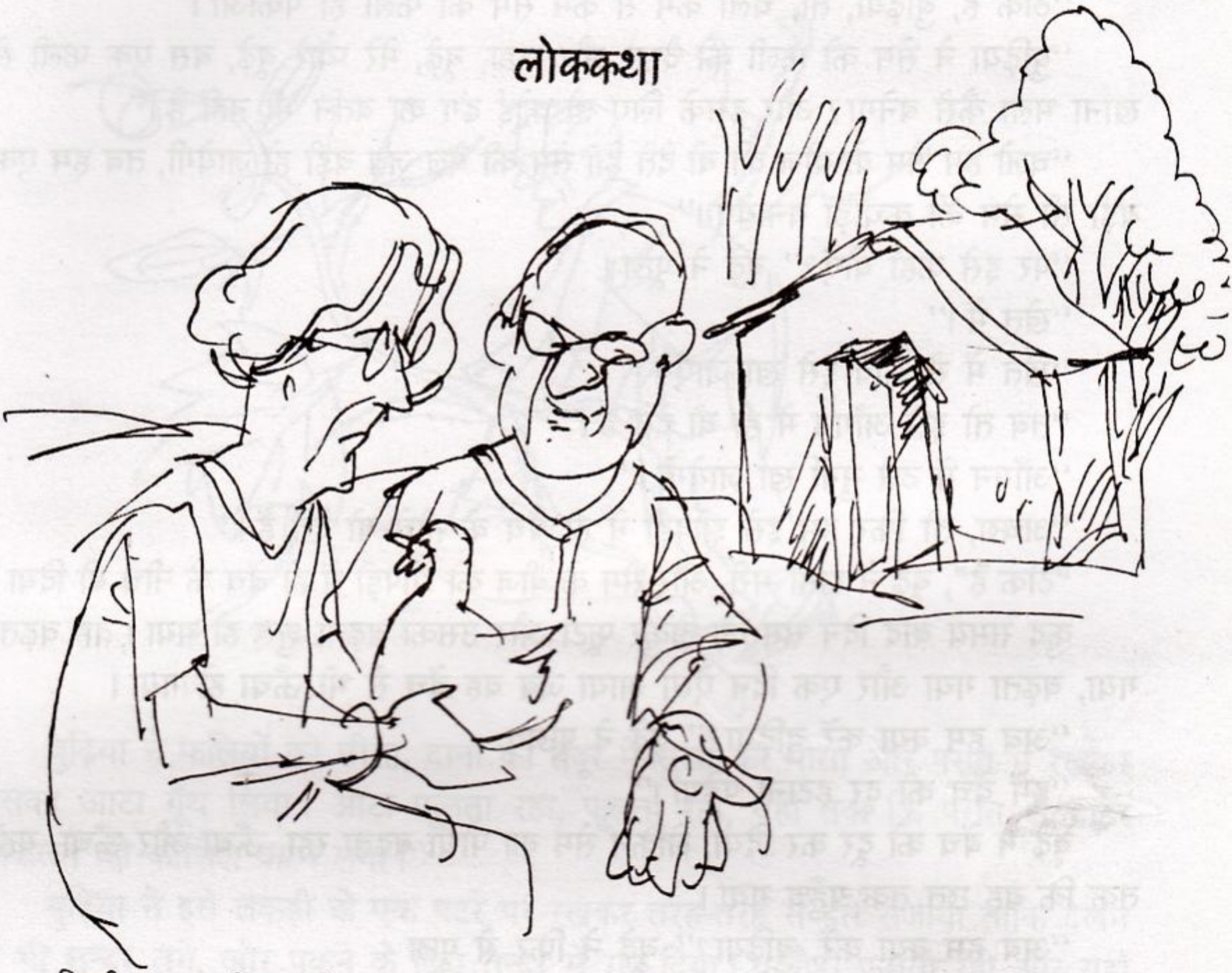

किसी समय की बात है, एक गाँव में एक बूढ़ा-बूढ़ी रहते थे। सिवाय एक मुर्गी के उनके पास कुछ नहीं था। वे इतने गरीब थे कि एक दिन ऐसा आया जब उनके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं बचा, तब बूढ़े आदमी ने कहा :

"ओ बुढ़िया, अरी ओ बुढ़िया, क्यों न हम मुर्गी को ही पका डालें?" लेकिन बूढ़ी औरत ने घबराकर अपने हाथ खड़े कर दिये।

"अरे कैसी बात सोच रहे हो तुम, बुढ़ऊ? अपनी मुर्गी को पकाने के बजाय मैं भूखी रहना पसन्द करूँगी।"

मुर्गी ने यह बात सुन ली, और दौड़ कर आँगन में गयी, वहाँ उसे सेम की एक फली मिली, जिसे वह बुढ़िया के पास ले आयी। बूढ़े ने इसे देखा और कहा :

"ठीक है, बुढ़िया, ता, चलो कम से कम सेम की फली ही पकाओ।"

"बुढ़िया ने सेम की फली को देखा और कहा, बूढ़े, मेरे प्यारे बूढ़े, बस एक फली से खाना भला कैसे बनेगा? और इसके लिए तो कोई ढंग का बर्तन भी नहीं है।"

"चलो हम सेम के बीज को बो देते हैं। सेम की बेल जब बड़ी हो जायेगी, तब हम एक बड़ी सी सेम की कचौड़ी बनायेंगे।"

"पर इसे कहाँ बोएँ?" बूढ़े ने पूछा।

"खेत में।"

"खेत में से कौवे इसे खा जाएँगे।"

"तब तो इसे आँगन में ही बो देते हैं।"

"आँगन में ठसे मुर्गी खा जायेगी।"

"अच्छा, तो फिर हम इसे झोपड़ी में ही बेंच के नीचे बो देते हैं।"

"ठीक है", बूढ़े ने हामी भरी, और सेम के बीज को झोपड़ी में ही बेंच के नीचे बो दिया।

कुद समय बाद दिन सेम का अंकुर फूटा और उसका बढ़ना शुरू हो गया। वह बढ़ता गया, बढ़ता गया और एक दिन ऐसा आया जब वह बेंच से भी ऊँचा हो गया।

"अब हम क्या करें बुढ़िया?" बूढ़े ने पूछा।

"हमें बेंच को दूर हटाना पड़ेगा।"

बूढ़े ने बेंच को दूर कर दिया, लेकिन सेम का पौधा बढ़ता रहा, ऊँचा और ऊँचा, यहाँ तक कि वह छत तक पहुँच गया।

"अब हम क्या करें, बुढ़िया?" बूढ़े ने फिर से पूछा

"हमें छत में छेद बना देना चाहिए।"

बूढ़े ने छत में छेद बना दिया, लेकिन सेम बढ़ता रहा – ऊँचा और ऊँचा, यहाँ तक कि वह ऊपर वाली छत तक पहुँच गया।

बूढ़े ने ऊपर वाली छत में भी छेद कर दिया।

सेम की बेल अब छत से बाहर दिखने लगी और धूप पाकर और जल्दी बढ़ने लगी।

जल्दी ही सेम का पौधा ऊपर आसमान तक पहुँच गया। बूढ़े ने एक थैला लिया और सेम के पौधे पर चढ़ गया, सारी तैयार फलियों को चुना और नीचे उतर आया।

बुढ़िया खुश थी। बूढ़ा सेम की फलियों का पूरा थैला लेकर आया था। उसने कहा, "अच्छा, अब हम कचौड़ी बना सकते हैं।"

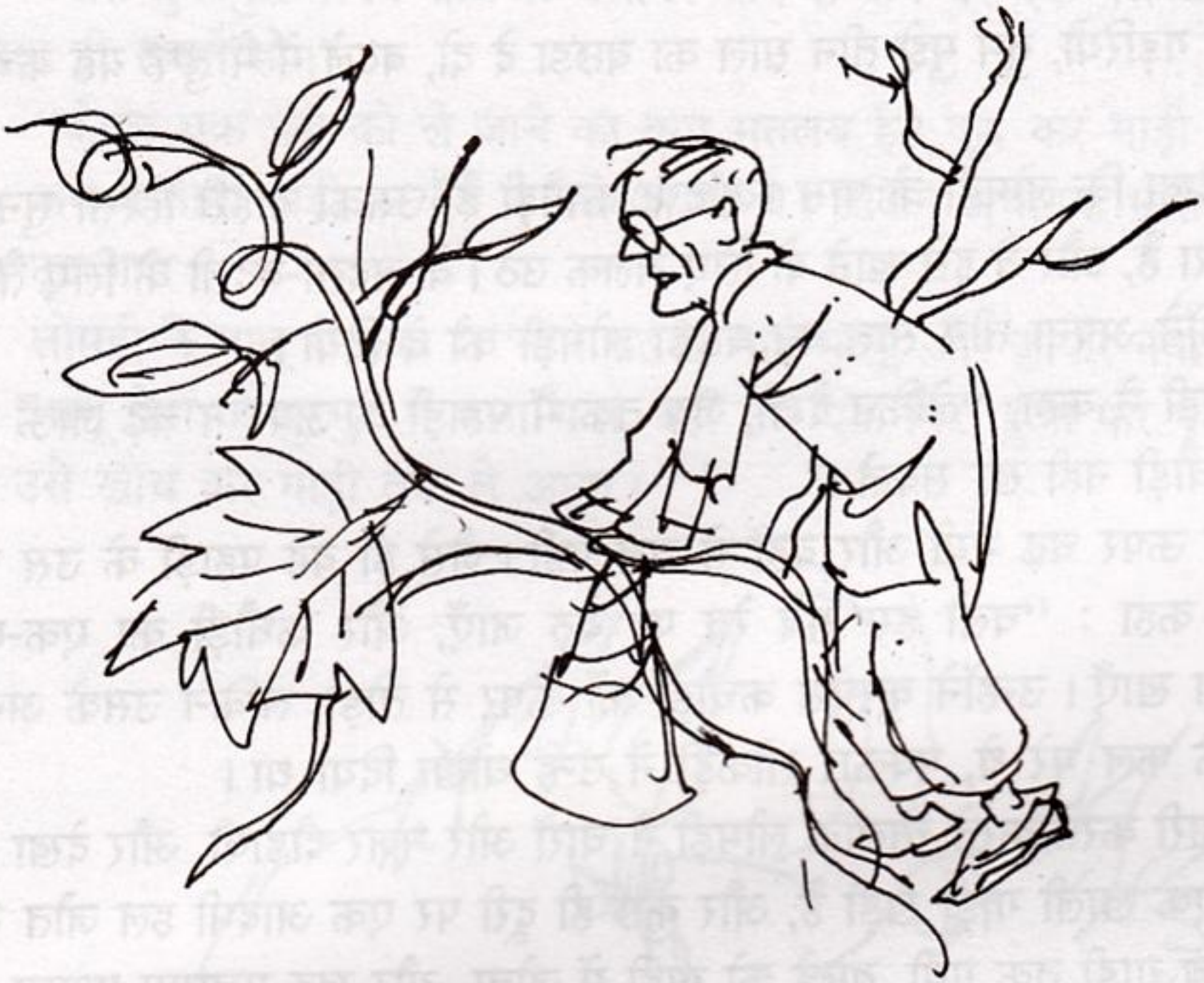

बुढ़िया ने फलियों को छीला, दानों को तंदूर में सुखा कर पीसा और परात में रखकर उसका आटा गूँथ लिया। आटा फूलता रहा, फूलता रहा, यहाँ तक कि परात से बाहर निकलने की कोशिश करने लगा।

बुढ़िया ने इसे लकड़ी के एक पटरे पर रखकर तरह-तरह से इसे सजाया ताकि देखने में भी सुन्दर लगे, और पकने के लिए तन्दूर में रख दिया। कचौड़ी फूलती रही और यहाँ तक कि तंदूर से बाहर फूट पड़ने की कोशिश करने लगी। बुढ़िया ने तुरंत तंदूर का ढक्कन खोलकर देखा, और कचौड़ी उछलकर फर्श पर आ गिरी, और लुढ़कते हुए दरवाजे के बाहर गायब हो गयी।

बूढ़ा और बुढ़िया कचौड़ी के पीछे दौड़ते रहे। लेकिन वह हाथ नहीं लगी, वे इसे पकड़ नहीं सके।

कचौड़ी लुढ़कती हुई जंगल में चली गयी। वहाँ एक चालाक लाल लोमड़ी उसकी तरफ आयी। उसने कचौड़ी को पकड़ा, उसमें भरा हुआ मुलायम पनीर खा लिया, और उसके बदले उसमें थोड़े से देवदारु के फल भर दिये और कचौड़ी को हाथ के नीचे दबाकर कुछ गड़रियों के पास दौड़ी गयी।

गड़रियो, ओ गड़रियो, तुम मुझे तीन साल का बछड़ा दे दो, बदले में मैं तुम्हें यह कचौड़ी दूँगी।

गड़रियो ने देखा कि लोमड़ी के पास स्वादिष्ट कचौड़ी है, उसका बाहरी हिस्सा सुनहरी चमक वाला कुरमुरा है, और वे इसे खाने के लिए ललक उठे। वे अदला-बदली के लिए तैयार हो गये, और उन्होंने अपना तीन साल का बछड़ा लोमड़ी को दे दिया।

चालाक लोमड़ी ने कहा, "लेकिन देखो, जब तक मैं पहाड़ी के ऊपर न चढ़ जाऊँ तब तक तुम लोग कचौड़ी नही खा सकते।"

वह बछड़े के ऊपर चढ़ गयी और वहाँ से चल पड़ी। जैसे ही वह पहाड़ी के उस पार गयी, गड़रियों ने कहा : "चलो हम सब रेत पर बैठ जाएँ, और कचौड़ी का एक-एक सुनहरा-भूरा टुकड़ा खाएँ। उन्होंने कुरमुरी कचौड़ी को ऊपर से तोड़ा, लेकिन उसके अन्दर तो बस देवदारु के फल भरे थे, मक्कार लोकड़ी ने उन्हें धोखा दिया था।

बछड़े पर सवारी करते-करते चालाक लोमड़ी ने चारों ओर नज़र दौड़ायी, और देखा कि सड़क के किनारे एक खाली गाड़ी खड़ी है, और कुछ ही दूरी पर एक आदमी हल जोत रहा है। लोमड़ी दबे पांव गाड़ी तक गयी, बछड़े को गाड़ी में जोता, और खुद मुलायम पुआल पर आराम से लेटकर बछड़े को छड़ी से कोंचते हुए चल पड़ी।

जल्दी ही वह जंगल में आ गयी, और वहाँ उसे एक भेड़िया मिला। उसकी हालत बिल्कुल खराब थी, और बड़ी मुश्किल से घिसटते हुए चल पा रहा था।

"तुम कहाँ जा रही हो बहन लोमड़ी?" उसने पूछा।

"जाना है पहाड़ी के पार, दूर की एक घाटी में।"

"क्यों?"

"ऐसा लगता है कि वहाँ लोगों के पास इतनी अधिक मुर्गियाँ हैं कि बाज भी उन्हें आराम से खाते हैं।"

"क्या वहाँ भेड़ें भी है?" भेड़िये ने लार टपकाते हुए पूछा।

"ढेर के ढेर!"

"अर्रे वाह!"

"क्या वहाँ उनके पास शहद भी बहुत है?"

"ऐसा लगता है कि वहाँ शहद की नदियाँ बह रही हैं।" भालू खुश हो गया।

"क्या तुम मुझे अपने साथ ले चलोगे? कम से कम मेरे एक पंजे को तो अपनी गाड़ी में रख ही सकते हो।"

"केवल एक पंजे को ले जाने का क्या मतलब है? कूद कर गाड़ी में चढ़ जाओ।"

अब वे तीनों गाड़ी पर बैठे वे चले जा रहे थे। लेकिन अचानक भारी बोझ से गाड़ी का डंडा टूट गया।

लोमड़ी ने भालू से कहा : "नीचे उतरो, भाई भालू, और जाकर नया डंडा ले आओ।"

भालू पेड़ों के झुरमुट में चला गया, वहाँ उसे एक गिरा हुआ फर वृक्ष मिल गया और वह उसे खींच कर गाड़ी तक ले आया।

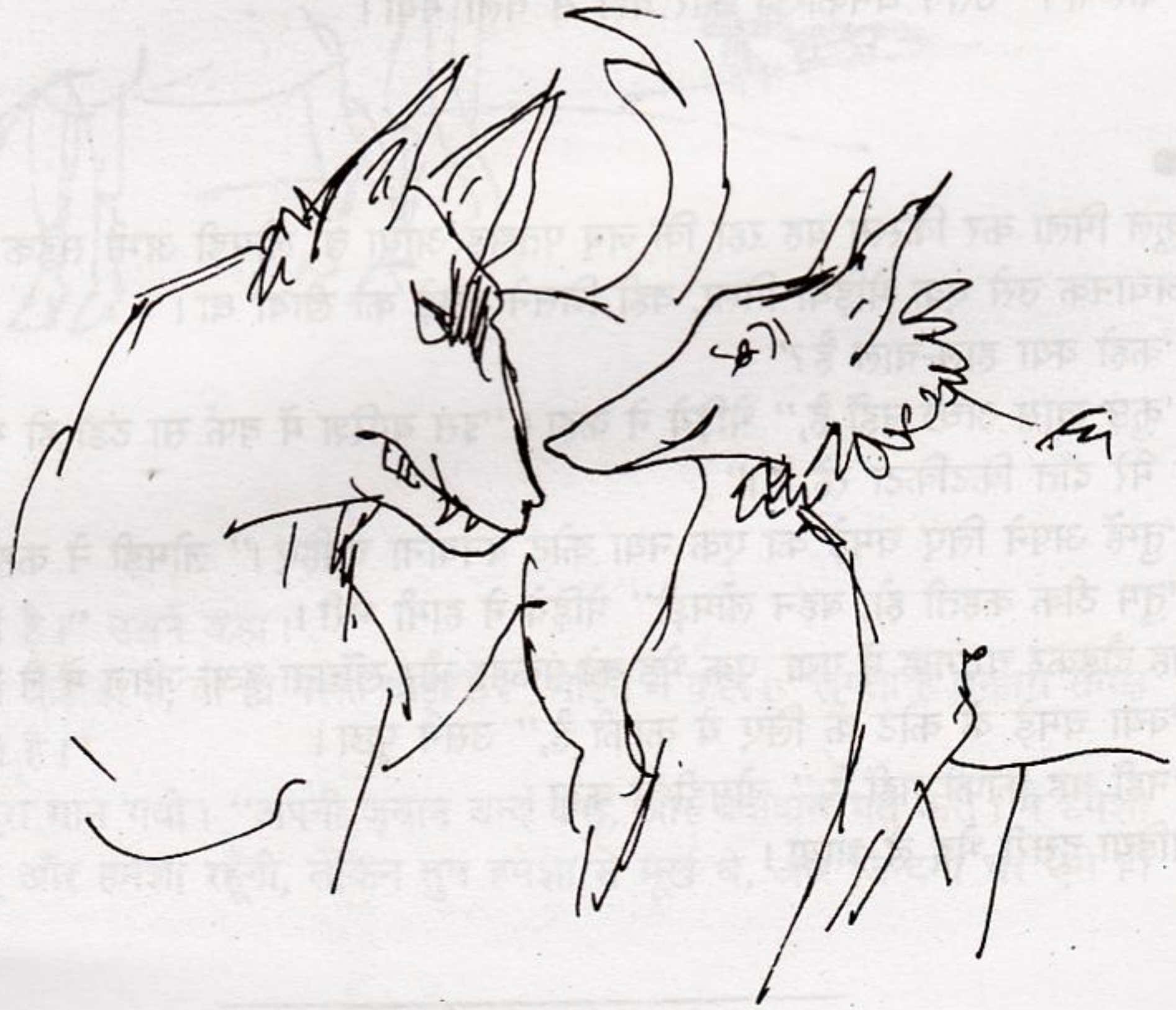

लोमड़ी ने यह देखते ही भालू को डाँटना शुरू कर दिया।

"ओह! भाई भालू, तुम कितने बड़े मूर्ख हो। पेड़ के तने से गाड़ी का डंडा कैसे बनेगा?"

तब उसने भेड़िये से कहा : "नीचे उतरो, भाई भेड़िया और जाकर एक पतला डंडा लाओ।"

भेड़िया चला गया और एक मुड़ी हुई पेड़ की डाली ले कर आया। लोमड़ी ने उसे भी डाँट लगाई, और खुद ही डंडा लाने चली गयी। इसी बीच भालू और भेड़िया जल्दी-जल्दी तीन साल के बछड़े को खा गये। उन्होंने जानवर की खाल में भूसा भर दिया, और भुस भरे हुए जानवर को उसके पैरों पर खड़ा करके मन ही मन हँसते हुए वहाँ से चले गये।

लोमड़ी आयी और इधर-उधर देखा, लेकिन भेड़िया और भालू दोनों में से कोई भी नहीं था, बस बछड़ा वहाँ खड़ा था, उसने नया डंडा लगाया, गाड़ी पर सवार हो गयी, और बछड़े को डंडे से कोंचा। लेकिन अरे ये क्या हुआ – वह तो धड़ाम से गिर ही पड़ा। लोमड़ी ने गिरते हुए बछड़े को देखा और समझ गयी कि क्या मामला है।

उसने गुस्से से कहा, "कोई बात नहीं बदमाशो! बस देखते जाओ! मैं इसका पूरा हिसाब वसूल करूँगी।" उसने धमकी दी और वहाँ से चली गयी।

●

कुल मिला कर किस्सा यह रहा कि जब पतझड़ आया तो लोमड़ी अभी सड़क पर ही थी। अचानक उसे एक भेड़िया मिला, वही जिसने बछड़े को खाया था।

"कहो क्या हाल-चाल है?"

"कुछ खास अच्छे नहीं है," भेड़िये ने कहा। "इस बारिश में बर्फ सा ठंडा हो गया हूँ, ठंड से मेरे दाँत किटकिटा रहे हैं।"

"तुम्हें अपने लिए चमड़े का एक नया कोट बनवाना चाहिए।" लोमड़ी ने कहा।

"तुम ठीक कहती हो, बहन लोमड़ी" भेड़िये ने हामी भरी।

वह दौड़कर चरागाह में गया, एक भेड़ को पकड़ा और खींचता हुआ जंगल में ले आया।

"क्या चमड़े के कोट के लिए ये काफी है," उसने पूछा।

"नहीं यह काफी नहीं है," लोमड़ी ने कहा।

भेड़िया दूसरी भेड़ ले आया।

"क्या अब यह काफी है?" उसने पूछा।

"नहीं, तुम्हें एक और चाहिए," लोमड़ी ने कहा।

भेड़िया तीसरी भेड़ लेकर आया।

"अब तुम्हें एक दर्जी ढूँढ़ना चाहिए," लोमड़ी ने कहा। "मैं एक अच्छे दर्जी को जानती हूँ, उसके पास चलते हैं।"

लोमड़ी भेड़िये को घास के मैदान में ले गयी। वहाँ झाड़ियों के पास जंजीर से बंधा हुआ तगड़ा घोड़ा घास चर रहा था।

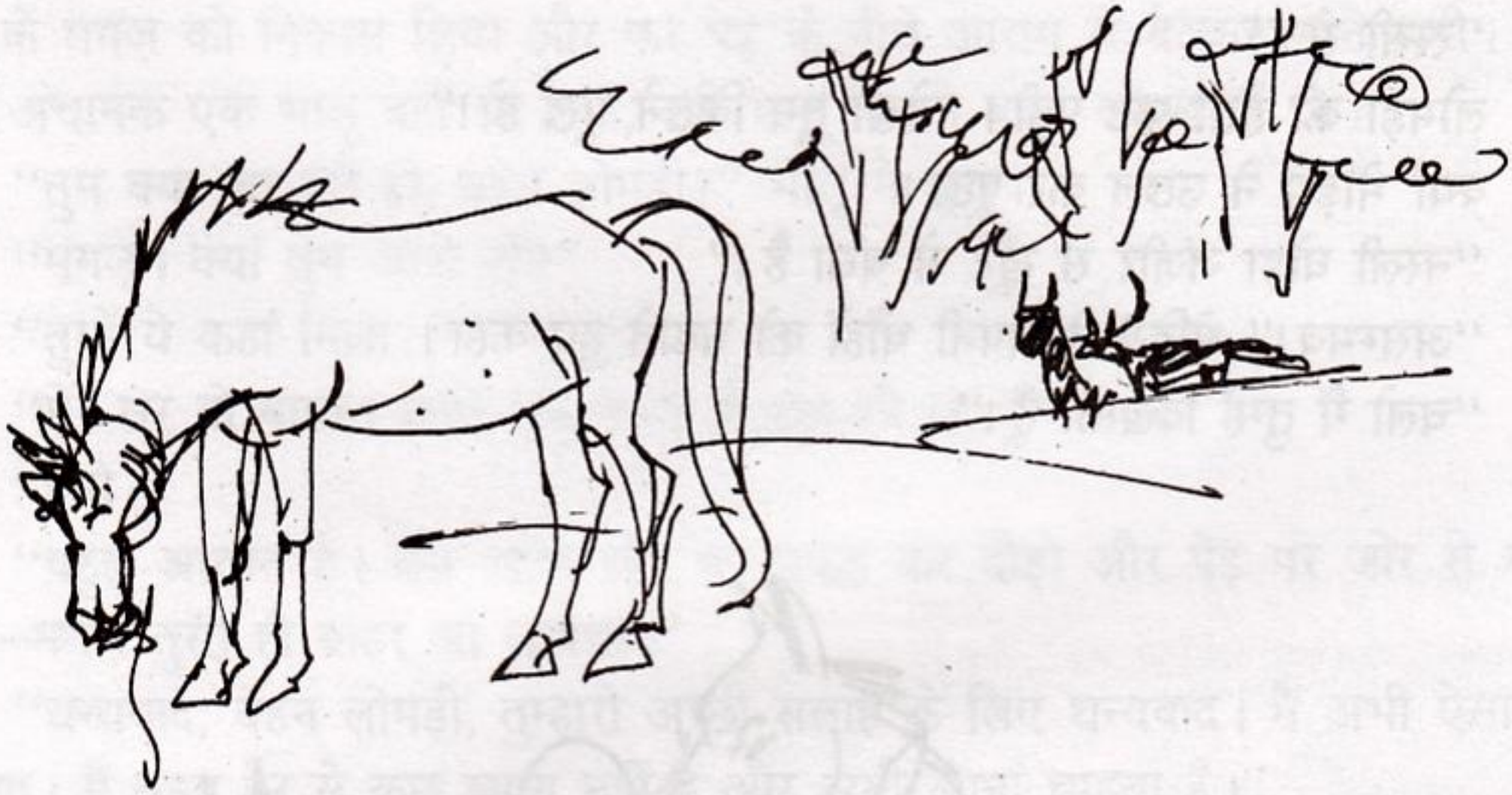

"वह वहाँ है।" उसने कहा।

"वह दर्जी थोड़े ही है, वो तो नस्ली घोड़ा है।" भेड़िये ने कहा। "लगता है तुम्हारी समझ गड़बड़ हो गयी है।"

लोमड़ी बुरा मान गयी। "अपनी ज़बान बन्द करो, और बकवास मत करो। मैं हमेशा से समझदार हूँ और हमेशा रहूँगी, लेकिन तुम हमेशा से मूर्ख थे, और जिन्दगी भर ऐसे ही

रहोगे।"

अब भेड़िया बुरा मान गया, और आगबबूला होकर बोला, "अभी पता चल जाएगा, हममें से कौन समझदार है।"

"पहले से डींग मत मारो", लोमड़ी ने कहा, "जरा चारो ओर देखो और तुम्हारी खाल उतर जायेगी।"

"कौन करेगा ऐसा? भेड़िया गुर्राया, उसके दाँत दिखने लगे।

"इस नस्ली घोड़े का मालिक।"

"असम्भव! भेड़िये ने हँसते हुए कहा। कोई ऐसा नहीं कर सकता है, तुम देखना।"

"यह घोड़ा किस चीज से बंधा है?" लोमड़ी ने भेड़िये से पूछा।

"रस्सी से।"

लोमड़ी की हँसी फूट पड़ी। "देखो तुम कितने मूर्ख हो!"

क्यों भेड़िये ने उछल कर पूछा।

"नस्ली घोड़ा जंजीर से खूँटे से बंधा है।"

"असम्भव!" भेड़िये ने अपनी भौंहों को चढ़ाते हुए कहा।

"चलो मैं तुम्हें दिखाती हूँ।"

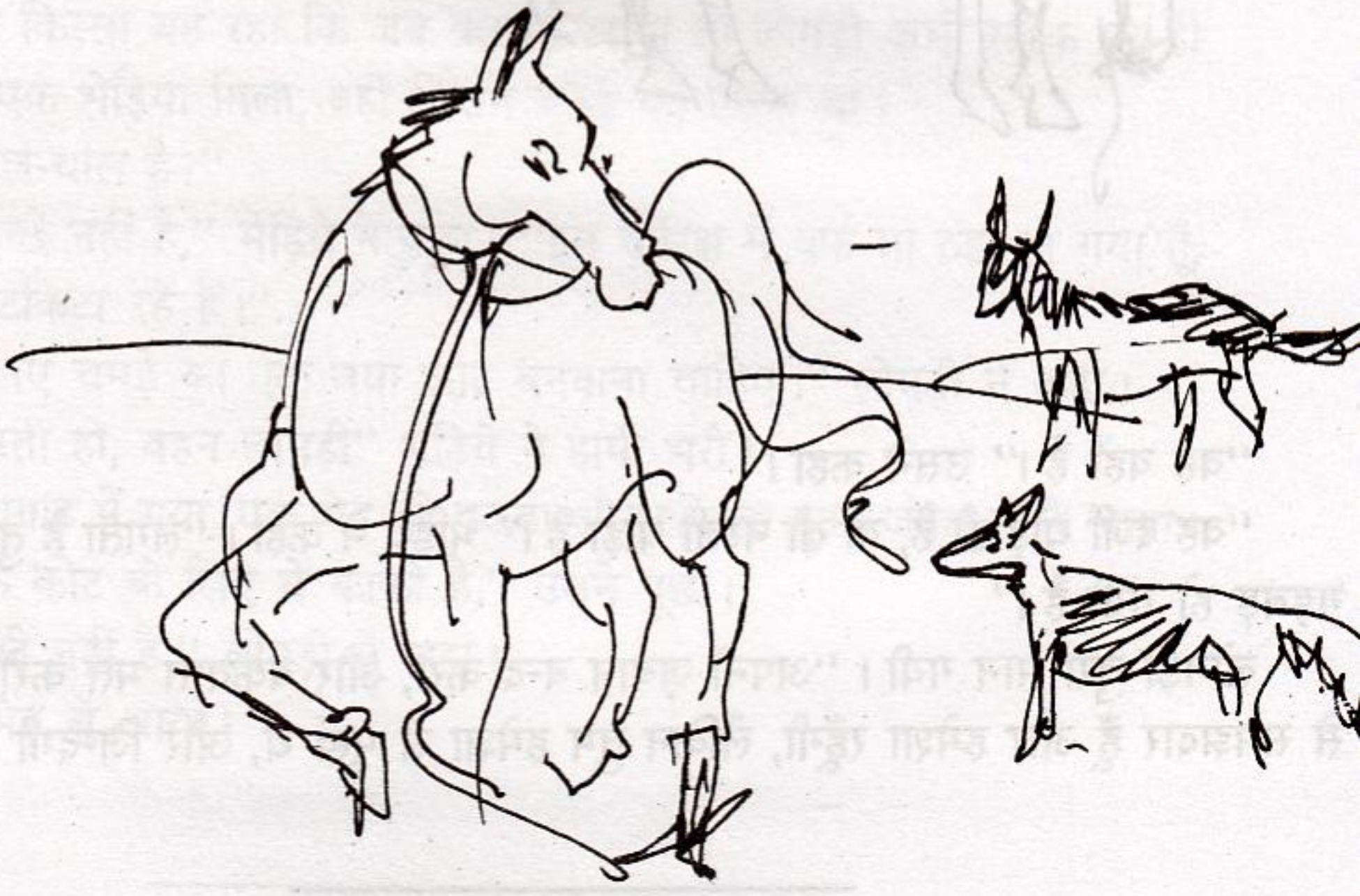

लोमड़ी ने भेड़िया को पकड़ कर खूँटे से बाँधा और रस्सी के अन्तिम सिरे को देखा; और उसके गर्दन की गोलाई का फंदा बनाया और फेंका। फिर भेड़िये ने इधर-उधर देखा, खुद को उसने फंदे से बंधा पाया। तब लोमड़ी दौड़ कर घोड़े के पास गयी और उसकी पूँछ का हिलाने लगी। घोड़ा अचानक डर गया और तेजी से घर की ओर लपका, वह अपने पीछे-पीछे भेड़िये को खींच रहा था और जमीन पर सिटने से उसकी खाल उधड़ी जा रही रही थी।

इसी बीच लोमड़ी जंगल में लौट गयी, और भेड़ को दलदल में दबा दिया। उसने केवल भेड़ के मगज़ को निकाल लिया और फर पेड़ के नीचे आराम से बैठकर खाने लगी।

अचानक एक भालू वहाँ आ गया, वही भालू जिसने बछड़े को खाया था।

"तुम क्या खा रही हो, बहन लोमड़ी?" भालू ने पूछा।

"मगज़। क्या तुम अन्धे हो?"

"तुम्हें ये कहां मिला??"

"मेरे सर के बाहर। अगर तुम चाहो तो तुम भी खा सकते हो।"

"कैसे?"

"बहुत आसान है। बस अपने सिर को पकड़ कर दौड़ो और पेड़ पर जोर से चोट करो—मगज़ तुरंत ही बाहर आ जायेगा।"

"धन्यवाद; बहन लोमड़ी, तुम्हारी अच्छी सलाह के लिए धन्यवाद। मैं अभी ऐसा ही करूँगा। मैं बहुत देर से कुछ खाया नहीं है और अभी खाना चाहता हूँ।"

उसने एक मोटा-सा ओक का पेड़ चुना, अपने सर को पकड़ा और अपनी पूरी ताकत के साथ दौड़कर उस पर सर दे मारा। और बस। भालू का अन्त हो चुका था।

चालाक लोमड़ी ने भालू का मगज़ पेट भर कर खाया और हँसते हुए पानी पीने के लिए नीचे झरने पर चली गयी।

लिथुआनिया की एक लोककथा

एक समय की बात है। एक आदमी हमेशा अपनी पत्नी को ताने मारता रहता था कि उसका काम कितना आसान है। उसके पास तो समय ही समय रहता है।

वह अपनी पत्नी से कहता, "मैं बैल की तरह दिन भर खेतों में खटता हूँ जबकि तुम घर में आराम करती रहती हो, और समय बर्बाद करती हो। बल्कि मैं तो कहूँगा कि तुम मजे करती हो।"

उसकी पत्नी रोज़-रोज़ ये ताने सुन-सुनकर तंग आ गयी। एक दिन उसने कहा, "तुम और मैं अपने कामों को बदल क्यों नहीं लेते? मैं दिन में खेतों में जाऊँगी और तुम यहाँ रहकर घर की देखभाल करोगे। तब हम देखेंगे कि किसकी ज़िन्दगी कितनी आसान है।" आदमी बहुत खुश हुआ।

"अच्छी बात है," उसने कहा। "मैं कल से घर में रहूँगा और घर के सभी कामों को पूरा करूँगा और तुम बाहर जाकर घास काटोगी।" दूसरे दिन पत्नी खेत जाने के लिए तैयार हुई। जाने से पहले वह आश्वस्त नहीं थी क्योंकि वह जानती थी कि वह क्या करेगा। उसने अपने पति से कहा :

"आज शनिवार है, मैं रात के खाने के लिए घर आऊँगी इसलिए कुछ दलिया बना लेना। और गाय को चरागाह में ले जाना भूलना मत," आदमी सिर्फ़ मुस्करा दिया।

"चिन्ता मत करो, मैं सब कर लूँगा," उसने कहा। पत्नी चली गयी तो पति ने चुरुट जलाई और सोचने लगा कि कामों को कहाँ से शुरू करना चाहिए। उसने पहले दलिया बनाने

की सोची। उसने बर्तन धोया, इसमें पानी भरा और पकाने लगा।

चुरुट बुझ रही थी तो उसने उसे फिर से जलाया, फिर उसने अँगीठी जलायी। धुआँ फूँकते -फूँकते उसका बुरा हाल हो रहा था, पर दलिया पकने का नाम ही नहीं ले रहा था। थोड़ी देर में पानी उबलने लगा और वह खड़ा होकर चूल्हे पर चढ़ी हुई दलिया को चलाता रहा। वह गाय के बारे में भूल गया और उसे तब याद आया जब गाय ने चिल्लाना शुरू किया।

"मैं अभी गाय को चारे के लिए बाहर ले जाता हूँ और फिर वापस आकर दलिया पका लूँगा," उसने सोचा। "या क्यों न तब तक इसमें कुछ और पानी डाल दिया जाये।"

वह पानी के लिए कुँए पर गया, पानी लाया और बर्तन में पानी डालने लगा, पर वह खुद को ज़्यादा पानी डालने से रोक नहीं पाया और वह इतना ज़्यादा हो गया कि बाहर बहने लगा और आग बुझ गयी। उसने फिर एक तीली जलाने की सोची, पर जैसे ही कि वह इसे करने जा रहा था गाय ने फिर से जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया।

"जरा ठहरो, मैं अभी तुम्हें ले आऊँगा!" आदमी चिल्लाया। "मुझे आग जला लेने दो।"

पर लकड़ी गीली थी और जल नहीं पायी तो उसने कुछ सूखे तिनके डाले। आखिरकार आग जल गई। बाहर गाय ने फिर से चिल्लाना शुरू किया तो आदमी उसे लेने के लिए दौड़ा। वह गोशाला में आया और खुद से कहा :

"अगर मैं गाय को चारे के लिए बाहर ले जाता हूँ तो या तो दलिया जल चुकी होगी या आग बुझ जायेगी। मैं सोचता हूँ कि गाय को बाहर ही बाँध दूँ, पास में ही घास है उसे खाती रहेगी और घास तो हर जगह एक ही जैसी होती है।"

और आदमी ने गाय के गले में एक रस्सी घुमाकर फेंकी, उसे गोशाला के बाहर लाया और उसके पैरों को बाँध दिया और खुद दुबारा रसोई में लौट आया।

उसे रास्ते में ही याद आया कि उसे अभी तो मक्खन निकालना था। उसी पल वह मलाई और मक्खन लेने के लिए अनाजघर में गया। वह फिर रसोई में लौट आया और मक्खन निकालने लगा, लेकिन प्यास लग रही थी, तो उसने चम्मच नीचे रखा और अनाजघर में आया जहाँ पीपे में सेब का रस रखा था, हड़बड़ी में वह रसोई का दरवाज़ा बन्द करना भूल गया था। बस फिर क्या था! सूअर और उसके सात छोटे बच्चे आँगन में थे, रसोई का दरवाज़ा खुला देखकर अनाजघर में घुस आये।

आदमी ने उन्हें तब देखा जब वह सेब का रस पीने के लिए पीपे का ढक्कन खोल रहा था। उसे याद आ रहा था कि मलाई का बर्तन रसोई के फर्श पर पड़ा था, वह घर के अन्दर तेज़ी

से भागा, और पीपे का ढक्कन खुला छोड़ दिया।

वह रसोई की ओर भागा, और देखा कि वहाँ पर फर्श पर मलाई में सूअर लोट रहा था। उसने लपककर लाठी उठाई और सूअर के मुँह पर मारी और सूअर गिर पड़ा और मर गया। अब वहाँ करने को कुछ नहीं बचा था।

तभी अचानक उसे फिर याद आया कि उसने तो पीपे का ढक्कन खुला छोड़ दिया था। वह अनाजघर में भागा और देखा कि पीपा खुला पाया और फर्श पर सेब का रस बिखरा हुआ था। वह क्या करता?

वह अनाजघर में चारों ओर घूमकर देखने लगा कि कहीं कुछ मक्खन बनाने के लिए मलाई मिल जाये पर कुछ नहीं मिला। अब वह वापस रसोई में आकर कामों को व्यवस्थित करने के बारे में सोचने लगा। तभी उसे ख्याल आया कि खाली पीपा सूख जाने की वजह से टूट गया था।

उसे डर था कि कहीं रसोई में और कोई जानवर न हो इसलिए उसने मथनी उठा ली। वह पानी लेने के लिए कुँए पर गया। उसने कुँए के किनारे मथनी रख दी और बाल्टी को नीचे डालकर पानी निकालने लगा।

जब वह पीपे में पानी भर रहा था तो उसे दलिया का ख्याल आया। रसोईघर से कुछ जलने की महक आ रही थी।

"गन्ध से कोई फर्क नहीं पड़ता है," उसने खुद से कहा, "असल बात है दलिया का स्वादिष्ट होना।"

उसने दलिया को जितना सम्भव हो सकता था अच्छा बनाने का निश्चय किया, अगर इसमें कुछ मक्खन डाल दिया जाये तो यह बेहतर होगा। ऐसा सोचकर वह अनाजघर में फिर देखने के लिए गया कि पुराने स्टाक में कुछ मक्खन तो नहीं है। वह हर जगह देखने लगा पर उसे कहीं नहीं मिला। अन्त में, उसने सोचा कि शायद उसकी पत्नी ने किसी जार में मक्खन रखा हो। वह एक बड़े से पीपे में देखने के लिए झुका और उसी में उलट गया।

फिर क्या था, पीपे का आटा फर्श पर फैल गया, और उसे छींक पर छींक आने लगी। वह पीपे के बाहर आना चाहता था, पर नहीं निकल सका।

पत्नी रात के खाने के लिए घर लौटी, तो वहाँ पर उसका पति कहीं दिखाई नहीं दिया।

आँगन में सूअर मरा पड़ा था, रसोई का फर्श मलाई से चिपचिपा था, गाय गोशाला के बाहर बँधी थी, उसका पैर टूटा था, और बर्तन में दलिया कोयले की तरह जली हुई थी पर उसका पति कहीं नजर नहीं आ रहा था।

पत्नी अनाजघर गयी, उसने पीपे में झाँका और देखा कि वह वहाँ पड़ा था। उसने आटे के पीपे से बाहर निकलने में उसकी मदद की। वह एक भली महिला थी, और उसने चीज़ों को बिखेरने के लिए उसे डाँटा नहीं। उसने हर चीज़ को साफ़ किया, दलिया पकायी, खुद और अपने पति को दी और बर्तनों को साफ़ करके आलमारी में लगा दिया। उस दिन से आदमी ने अपनी पत्नी की गल्तियाँ नहीं निकालीं और उससे कभी नहीं कहा कि उसका काम बड़ा आसान है।

• • •

अनुराग ट्रस्ट
लखनऊ